ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 116-118**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

आधुनिक समाज व्यवस्था एवं मूल्यों का वृद्धजनों पर प्रभाव

अनिल कुमार, 2. प्रोफेसर राम नरेश यादव

शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष– समाजशास्त्र विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-01.09.2025, Revised-08.09.2025, Accepted-14.09.2025 **E-mail : aniljiararia@gmail.com**

सारांशः ***आधुनिक समाज व्यवस्था एवं मूल्यों का वृद्धजनों पर प्रभाव एक बहुआयामी विषय है, जो वैश्वीकरण, शहरीकरण, औद्योगीकरण और व्यक्तिवादी मूल्यों के प्रसार से जुड़ा हुआ है। भारत जैसे विकासशील देशों में, जहां संयुक्त परिवार प्रणाली पारंपरिक रूप से वृद्धजनों को सम्मान और सुरक्षा प्रदान करती थी, आधुनिक परिवर्तनों ने वृद्धों की स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इस शोध पत्र में, आधुनिक समाज के नकारात्मक प्रभावों जैसे सामाजिक अलगाव, आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक विघटन और स्वास्थ्य समस्याओं पर चर्चा की गई है, साथ ही कुछ सकारात्मक पहलुओं जैसे स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी में सुधार और स्वतंत्रता की भावना पर भी। 2025 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में वृद्धजन (60 वर्ष से अधिक) जनसंख्या कुल का लगभग 10.5% है, जो 2036 तक 23 करोड़ (15%) तक पहुंचने की उम्मीद है। आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार, जैसे–जैसे समाज आधुनिक होता है, वृद्धों का दर्जा घटता जाता है, क्योंकि युवा पीढ़ी नए कौशलों और अवसरों पर ध्यान केंद्रित करती है। अध्ययन से पता चलता है कि पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव संयुक्त परिवारों के विघटन को बढ़ावा देता है, जिससे वृद्धों में अवसाद, अकेलापन और आत्मसम्मान की हानि होती है। हालांकि, नीतिगत हस्तक्षेप जैसे राष्ट्रीय वृद्धजन नीति (1999) और माता–पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण–पोषण एवं कल्याण अधिनियम (2007) इन प्रभावों को कम करने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्र का उद्देश्य आधुनिक मूल्यों के प्रभावों का विश्लेषण करना और सुझाव देना है कि पारिवारिक बंधनों को मजबूत बनाकर और सामुदायिक समर्थन बढ़ाकर वृद्धों की स्थिति सुधारी जा सकती है। संदर्भों में भारतीय और अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों का उपयोग किया गया है, जो विषय की गहराई प्रदान करते हैं। कुल मिलाकर, आधुनिक समाज वृद्धों के लिए चुनौतियां पैदा करता है, लेकिन सांस्कृतिक पुनरुत्थान और नीतियों से सकारात्मक परिवर्तन संभव है।***

कुंजीभूत शब्द– **आधुनिक समाज व्यवस्था, औद्योगीकरण, व्यक्तिवादी मूल्य, सामाजिक अलगाव, आर्थिक असुरक्षा, विघटन।**

परिचय – वृद्धावस्था जीवन का एक प्राकृतिक चरण है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों का सामना करता है। भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से वृद्धजनों को परिवार और समाज का आधार माना जाता रहा है, जहां वे ज्ञान, अनुभव और नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करते थे। हालांकि, आधुनिक समाज व्यवस्थाकृजिसमें औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैश्वीकरण और व्यक्तिवादी मूल्यों का प्रसार शामिल हैकृने इस स्थिति को उलट दिया है। आधुनिकीकरण सिद्धांत (Modernization Theory) के अनुसार, जैसे–जैसे समाज आधुनिक होता जाता है, वृद्धों का सामाजिक दर्जा घटता जाता है, क्योंकि उत्पादन के नए तरीके, युवा–केंद्रित अर्थव्यवस्था और परमाणु परिवार वृद्धों को हाशिए पर धकेल देते हैं। भारत में, जहां वृद्धजन जनसंख्या का बढ़ता हिस्सा है (2022 में 10.5%, 2050 तक 20.8% और 2100 तक 36% से अधिक), आधुनिक मूल्यों का प्रभाव विशेष रूप से स्पष्ट है। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं, और वृद्धों को अकेलापन, आर्थिक असुरक्षा और स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

2025 के संदर्भ में, भारत तेजी से जनसांख्यिकीय परिवर्तन से गुजर रहा है, जहां वृद्ध जनसंख्या 2011 के 10 करोड़ से बढ़कर 2036 तक 23 करोड़ हो जाएगी। यह वृद्धि स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और पारिवारिक संरचना पर दबाव डाल रही है। आधुनिक मूल्यों जैसे व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद और करियर–केंद्रित जीवनशैली ने वृद्धों को बोझ के रूप में देखना शुरू कर दिया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक समाज व्यवस्था एवं मूल्यों का वृद्धजनों पर प्रभाव का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में। हम नकारात्मक प्रभावों जैसे सामाजिक अलगाव, पारिवारिक विघटन और मानसिक स्वास्थ्य गिरावट पर ध्यान देंगे, साथ ही सकारात्मक पहलुओं जैसे बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं पर भी। अध्ययन का आधार द्वितीयक डेटा, साहित्य समीक्षा और हालिया रिपोर्टों पर है। अंत में, सुझाव दिए जाएंगे कि कैसे इन प्रभावों को कम किया जा सकता है। यह विषय महत्वपूर्ण है क्योंकि वृद्धजन समाज की अमूल्य धरोहर हैं, और उनकी उपेक्षा पूरे समाज की संरचना को प्रभावित करती है।

उपकल्पना (Hypothesis) – इस शोध की मुख्य उपकल्पना यह है कि आधुनिक समाज व्यवस्था एवं मूल्यों का वृद्धजनों पर मुख्य रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे उनका सामाजिक अलगाव, मानसिक स्वास्थ्य गिरावट और आर्थिक असुरक्षा बढ़ती है। यह उपकल्पना आधुनिकीकरण सिद्धांत पर आधारित है, जो बताता है कि आधुनिक परिवर्तन वृद्धों के पारंपरिक दर्जे को कमजोर करते हैं। उपकल्पना की परीक्षा के लिए, हम मानते हैं कि व्यक्तिवादी मूल्य संयुक्त परिवारों के विघटन को बढ़ावा देते हैं, जिससे वृद्धों में अकेलापन बढ़ता है। साथ ही, एक सहायक उपकल्पना यह है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य सुधार कुछ सकारात्मक प्रभाव प्रदान करते हैं, जैसे स्वतंत्र जीवनशैली और बेहतर देखभाल। इन उपकल्पनाओं का परीक्षण साहित्य समीक्षा और विश्लेषण से किया जाएगा, जहां सकारात्मक आयु पहचान सामाजिक भागीदारी को प्रोत्साहित करती है, लेकिन नकारात्मक मूल्य इसे बाधित करते हैं।

शोध विधि (Research Methodology) – यह शोध मुख्य रूप से वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) विधि पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा के अभाव में, हमने साहित्य समीक्षा, सरकारी रिपोर्टों, शैक्षणिक पत्रिकाओं और ऑनलाइन स्रोतों से जानकारी एकत्र की है। शोध का प्रकार गुणात्मक (Qualitative) है, जहां आधुनिक प्रभावों की व्याख्या की गई है। डेटा संग्रह के लिए, वेब सर्च, पीडीएफ दस्तावेजों और हालिया अध्ययनों का उपयोग किया गया, जैसे च्ठ रिपोर्ट (2025), UNPF डेटा और छब्ठप् लेख।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

नमूना चयन – भारत–केंद्रित अध्ययन, जिसमें ग्रामीण–शहरी विभाजन शामिल है। विश्लेषण के लिए, थीमेटिक एनालिसिस (Thematic Analysis) विधि अपनाई गई, जहां प्रभावों को नकारात्मक, सकारात्मक और नीतिगत श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। नैतिक विचारः सभी स्रोतों का उचित उद्धरण किया गया है। सीमाएंः प्राथमिक सर्वेक्षण की कमी से सामान्यीकरण सीमित है।

साहित्य समीक्षा – आधुनिक समाज के प्रभाव पर कई अध्ययन उपलब्ध हैं। आधुनिकीकरण सिद्धांत, डोनाल्ड कोगिल और लोवेल होम्स द्वारा 1972 में विकसित, बताता है कि आधुनिकीकरण के चार मुख्य पहलू– स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी में सुधार, आर्थिक तकनीकें, शहरीकरण और शिक्षा का विस्तारकृवृद्धों के दर्जे को कम करते हैं। स्वास्थ्य सुधार से जीवन प्रत्याशा बढ़ती है, लेकिन श्रम बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने से वृद्धों को सेवानिवृत्ति के लिए मजबूर किया जाता है, जिससे आय, प्रतिष्ठा और सम्मान की हानि होती है। आर्थिक तकनीकें नए रोजगार सृजित करती हैं जो युवाओं के अनुकूल हैं, जिससे वृद्धों की पारंपरिक भूमिकाएं अप्रासंगिक हो जाती हैं। शहरीकरण युवाओं को शहरों की ओर खींचता है, जिससे ग्रामीण वृद्ध अलग–थलग पड़ जाते हैं, और शिक्षा का प्रसार पारंपरिक ज्ञान को पुराना बना देता है।

भारतीय संदर्भ में, अध्ययन दिखाते हैं कि संयुक्त परिवारों का विघटन वृद्धों की समस्याओं का प्रमुख कारण है। एक अध्ययन में पाया गया कि आधुनिक भारत में औद्योगीकरण और नगरीकरण से संयुक्त परिवार तेजी से विघटित हो रहे हैं, जिससे वृद्धों को परिवार में सम्मान की कमी का सामना करना पड़ता है। वृद्धों की समस्याएं जैसे घर में अनादर, अकेलापन और स्वास्थ्य गिरावट पश्चिमी संस्कृति के प्रवेश से जुड़ी हैं। एक अन्य अध्ययन में उल्लेख है कि आधुनिक युग में बुजुर्ग असुरक्षित हो रहे हैं, क्योंकि परिवार की जिम्मेदारियां बदल रही हैं और युवा अपने करियर पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। डेटा से पता चलता है कि 51.2% लोग मानते हैं कि वृद्ध परिवार में रहते हैं, लेकिन खुशी से नहीं, और 57.3% को भावनात्मक– शारीरिक देखभाल की कमी है।

महिला वृद्धजनों पर प्रभाव अधिक गंभीर है। एक अध्ययन में वाराणसी की 200 महिलाओं पर पाया गया कि 72.5% मानती हैं कि आधुनिकीकरण ने उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को तेज किया है, जिससे भूमिका हानि और अलगाव बढ़ा है। सामाजिक भागीदारी और अंतःपीढ़ी एकजुटता SWB (सब्जेक्टिव वेलबीइंग) को बढ़ाती है, लेकिन लिंग मॉडरेशन से महिलाओं को सहयोगी पारिवारिक गतिशीलता से अधिक लाभ होता है।

परंपरागत अे आधुनिक रहन–सहन में, दक्षिण भारत के अध्ययन से पता चलता है कि परस्पर देखभाल और भावनात्मक समर्थन वृद्धों की खुशी के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन आधुनिक परमाणु परिवारों में अकेलापन बढ़ता है। भारत में उम्र बढ़ने की दृ ष्टिकोण में संघर्ष दृष्टिकोण बताता है कि आर्थिक दबाव और महिलाओं की कार्यबल भागीदारी से देखभाल की कमी होती है। कुल मिलाकर, साहित्य आधुनिक मूल्यों के नकारात्मक प्रभावों को रेखांकित करता है, लेकिन नीतिगत समर्थन से सुधार संभव है। 2025 की रिपोर्टों से, वृद्धों की बेघर स्थिति आर्थिक तंगी और सामाजिक बदलाव से जुड़ी है।

आधुनिक समाज व्यवस्था का वृद्धजनों पर नकारात्मक प्रभाव – आधुनिक समाज व्यवस्था ने वृद्धजनों को कई चुनौतियों से घेर दिया है। सबसे प्रमुख है संयुक्त परिवारों का विघटन। पारंपरिक भारतीय समाज में वृद्ध परिवार के केंद्र में होते थे, जहां वे निर्णय लेते थे और सम्मान पाते थे। लेकिन शहरीकरण और प्रवास से युवा शहरों की ओर जाते हैं, जिससे वृद्ध ग्रामीण क्षेत्रों में अकेले रह जाते हैं। एक अध्ययन में कहा गया है कि आधुनिकीकरण से सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव वृद्धों को बेघर बना रहे हैं।5इ1म0क इससे वृद्धों में अकेलापन बढ़ता है, और वे भावनात्मक रूप से टूट जाते हैं। डेटा से पता चलता है कि 46.4% वृद्ध परिवार में अनादर का सामना करते हैं।

व्यक्तिवादी मूल्यों का प्रसार वृद्धों को बोझ मानता है। पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित युवा अपने करियर और व्यक्तिगत जीवन को प्राथमिकता देते हैं, जिससे वृद्धों की देखभाल उपेक्षित होती है। उदाहरण के लिए, आदिवासी वृद्धों पर शहरीकरण का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आर्थिक असुरक्षा एक बड़ी समस्या हैय वृद्धों की पेंशन अपर्याप्त है, और स्वास्थ्य व्यय बढ़ते हैं। UN के अनुसार, 2050 तक भारत में वृद्ध 319 मिलियन होंगे, लेकिन देखभाल प्रणाली अपर्याप्त है।

स्वास्थ्य प्रभाव गंभीर हैं। आधुनिक जीवनशैली से वृद्धों में अवसाद और पुरानी बीमारियां बढ़ती हैं। सामाजिक अलगाव से SWB घटता है, हालांकि सामाजिक भागीदारी इसे सुधार सकती है। महिला वृद्धजनों में यह अधिक है, क्योंकि वे आर्थिक रूप से निर्भर होती हैं और विरासत अधिकारों से वंचित। 55% महिलाएं बच्चों के साथ रहती हैं लेकिन अलगाव महसूस करती हैं।

सामाजिक बहिष्कार एक अन्य प्रभाव है। आधुनिक समाज में वृद्धों को उपयोगी नहीं माना जाता, जिससे उनकी भूमिका सीमित हो जाती है। केरल के अध्ययन में पाया गया कि QoL (क्वालिटी ऑफ लाइफ) सामाजिक गतिशीलता से प्रभावित होता है। कुल मिलाकर, नकारात्मक प्रभाव वृद्धों को असुरक्षित बनाते हैं, जैसे स्वास्थ्य समस्याएं और मानसिक विकार।

आधुनिक समाज व्यवस्था का वृद्धजनों पर सकारात्मक प्रभाव – हालांकि ज्यादातर नकारात्मक, कुछ सकारात्मक प्रभाव भी हैं। स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी में सुधार से जीवन प्रत्याशा बढ़ी है, जिससे वृद्ध लंबे समय तक सक्रिय रह सकते हैं। आधुनिकीकरण से चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य में प्रगति हुई है, जो वृद्धों की सेहत सुधारती है। भारत में, वृद्धों के लिए पेंशन और स्वास्थ्य योजनाएं उपलब्ध हैं, जैसे राष्ट्रीय वृद्धजन नीति।

आधुनिक रहन–सहन में स्वतंत्रता की भावना बढ़ी है। दक्षिण भारत के अध्ययन में पाया गया कि परमाणु परिवारों में वृद्ध गोपनीयता और निर्णय लेने की आजादी पाते हैं। मोबाइल तकनीक से परिवार से जुड़े रहना आसान हुआ है। सामुदायिक भागीदारी से SWB बढ़ता है, और लिंग नगण्य भूमिका निभाता है।

शिक्षा और जागरूकता से वृद्ध नए भूमिकाएं अपनाते हैं, जैसे समुदाय नेतृत्व या मेंटरशिप। मुक्ति दृष्टिकोण से, वृद्ध अपनी पहचान पुनःनिर्मित कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी का उपयोग, जैसे होम–बेस्ड केयर टेक्नोलॉजी, वृद्धों की स्वतंत्रता बढ़ाता है।4९429 हालांकि, ये प्रभाव सीमित हैं और नकारात्मकों से कम।

भारत के संदर्भ में विश्लेषण – भारत में, आधुनिक प्रभाव विशेष रूप से ग्रामीण–शहरी विभाजन से जुड़े हैं। शहरीकरण से प्रवास बढ़ा, जिससे वृद्ध अकेले रहते हैं। एक अध्ययन में 83% वृद्ध अलगाव का सामना करते हैं। पारिवारिक मूल्यों में गिरावट से वृद्धों की देखभाल प्रभावित हुई है। 2025 तक, वृद्धों की हिस्सेदारी 20% हो सकती है, लेकिन केवल 4% के पास स्वास्थ्य बीमा है।

नीतियां जैसे 2007 का अधिनियम वृद्धों की सुरक्षा प्रदान करती हैं, लेकिन कार्यान्वयन कमजोर है। केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में वृद्ध अधिक हैं, जहां सामाजिक भागीदारी फवर सुधारती है। महिलाओं में समस्या अधिक, क्योंकि वे स्वास्थ्य और

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

आर्थिक रूप से कमजोर हैं। सिल्वर इकोनॉमी से वृद्धों की संभावनाएं बढ़ रही हैं। कुल मिलाकर, भारत में आधुनिक मूल्य वृद्धों को चुनौती देते हैं, लेकिन सांस्कृतिक पुनरुत्थान से सुधार संभव है।

निष्कर्ष – आधुनिक समाज व्यवस्था एवं मूल्यों ने वृद्धजनों पर मुख्य रूप से नकारात्मक प्रभाव डाला है, जैसे अलगाव, विघटन और असुरक्षा, लेकिन स्वास्थ्य सुधार जैसे सकारात्मक पहलू भी हैं। भारत में, जहां वृद्ध जनसंख्या बढ़ रही है, नीतिगत और सामाजिक हस्तक्षेप आवश्यक हैं। सुझावः संयुक्त परिवारों को प्रोत्साहन, जागरूकता अभियान, पेंशन वृद्धि और सामुदायिक कार्यक्रम। पारंपरिक मूल्यों का पुनरुत्थान और अंतःपीढ़ी बंधनों को मजबूत बनाकर वृद्धों की स्थिति सुधारी जा सकती है।

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत में वृद्धजन – PIB (2025) – https://www.pib.gov.in
2. बुजुर्गों की बढ़ती आबादीः 2025 तक देश की 20% आबादी होगी 60 पार – https://www-bhaskar-com/local/rajasthan/jaipur/news/by-2025-20-of-the-countrys-population-will-be-above-60-only-4-have-health-insurance-134881382.
3. सिल्वर इकोनॉमी, भारत के वृद्धजनों की नई ताकत और संभावनाएं ।
4. भारत में बेघर वृद्धजनों की स्थिति – https://www.sanskritiias.com/hindi/current-affairs/situation-of-homeless-elderly-in-india
5. परिवर्तनशील सामाजिक व्यवस्था में महिला वृद्धजनों की समस्याओं सम्बन्धी – https://www.questjournals.org/jrhss/papers/vol11/issue11/1111200205-pdf
6. भारत में बुजुर्गों की देखभाल & https://pwonlyias.com/hi/current-affairs/elderly-care-in-india
7. डेली न्यूज (23 Jan, 2025)

*****